International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 6, Issue 5, May 2019
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

शिक्षा के क्षेत्र में प्रमुख शिक्षावादियों के विचारों का उल्लेखन

डॉ पूनम लता मिड्ढा, सहायक व्यख्याता (शिक्षा), श्री विनायक महाविधालय, श्री विजयनगर (राजस्थान)

शिक्षा मानव की मूलभूत आवश्यकताओं में एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। शिक्षा वह माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने ज्ञान को एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी को हस्तान्तरित करता है। शिक्षा व्यक्ति की अन्तर्निहित क्षमता और उसके व्यक्तित्व को विकसित करने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया उसे समाज में एक शिक्षित व्यक्ति की भूमिका निभाने के योग्य बनाती है एवं समाज के सदस्य के रूप में उसे एक जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए ज्ञान और कौशल प्रदान करती है। इस कार्य में शिक्षाविदों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। देश के प्रमुख शिक्षाविद् गाँधी, टैगोर, स्वामी विवेकानन्द, राधाकृष्णन, जिददू कृष्णमूर्ति, दयानन्द सरस्वती ... आदि महापुरुष न केवल शिक्षाविद् थे अपितु दार्शनिक और प्रगतिशील विचारक भी रहे हैं। जिन्होंने शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि को सशक्त बनाया और शिक्षा संबंधी अपने विचारों से देश में शिक्षा को समय–समय पर नई दिशा प्रदान की है। इन्होंने देश के नागरिकों को शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं वैश्विक परिदृश्य में योग्य बनाने संबंधी अपने शैक्षिक विचारधारा से मार्गदर्शन प्रदान किया है।

1. शंकराचार्य की शैक्षिक विचारधारा

आदि गुरु शंकराचार्य भारत के एक महान दार्शनिक एवं धर्मप्रवर्तक थे। उन्होंने अद्वैत वेदान्त को ठोस आधार प्रदान किया। इन्होंने सनातन धर्म की विविध विचारधाराओं का एकीकरण किया। उपनिषदों और वेदान्त सूत्रों पर लिखी हुई उनकी टीकाएँ बहुत प्रसिद्ध है उन्होंने भारतवर्ष में चार मठों की स्थापना की जो अभी तक प्रसिद्ध और पवित्र माने जाते है। शंकराचार्य एक महान समन्वयवादी दार्शनिक थे। उन्हें हिन्दू धर्म को पुनः स्थापित एवं प्रतिष्ठित करने का श्रेय दिया जाता है। उनके शिक्षा सम्बन्धी विचार निम्नानुसार है –

शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त में वास्तविक ज्ञान, ब्रह्म, जीव आदि के मूल सिद्धान्त निम्न लोक से स्पष्ट हो जाता है –

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

"ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मोव नाऽपरः'' अर्थात् ब्रह्म सत्य है, जगत मिथ्या है, जीव ब्रह्म है तथा जीव और ब्रह्म में कोई भेद नहीं है। अद्वैत दर्शन में अधिकारी शिष्य जब गुरू के पास जाता है तो वह अपेक्षित होकर सात प्रश्न पूछता हैः– है गुरूदेव! बन्ध क्या है! यह बन्ध कैसे आया? क्या इसकी प्रतिष्ठा भी है! इसकी स्थिति कैसी है? इस बंधन से छुटकारा कैसे मिल सकता है? परमात्मा किसे कहते है? उसका विवेक कैसा होता है? आदि इस आधार पर शंकराचार्य के तात्विक विचारों को सात भागों ब्रह्म, माया, अविद्या, आत्मा, विक्षेपशक्ति, अध्यासवाद, सृष्टि प्रक्रिया आदि के अन्तर्गत स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। यह केवल एक दर्शन ही नहीं है। यह एक सम्पूर्ण या आदर्श मानव बनाने के लिए पथ–प्रदर्शिका प्रदान करता है। इसका ज्ञान व्यक्ति को यह निर्देश देता है कि वह क्या सीखे और कैसे उसे सीखे। जो भी व्यक्ति वेदान्त दर्शन के अनुसार शिक्षा ग्रहण करता है वह उसके अनुसार क्रिया कलाप करता है। वेदान्त सम्प्रदाय की मान्यता है कि मानव अपने वर्तमान के कर्मों तथा पूर्व के कर्मों से नियन्त्रित रहता है। धर्म ही केवल मानव ब्रह्माण्ड में संपोषित रखता है। अविद्या उसे माया के जाल में बांध देती है। अविद्या तथा माया का जाल ही मानव के दुःख व वेदना का कारण है। मनुष्य ज्ञान द्वारा विराग की भावना को अपना कर, दुःख व वेदना से स्वयं को बचा सकता है।

2. रवीन्द्रनाथ टैगोर की शैक्षिक विचारधारा

भारतीय शिक्षा शास्त्रियों में रवीन्द्रनाथ टैगोर का अपना द्वितीय स्थान है। डॉ. एस. सिन्हा के अनुसार – "रवीन्द्रनाथ टैगोर का जीवन आधुनिक भारत के पूरे युग में फैला हुआ है। उनके व्यक्तित्व विकास में नव जागरण की मुख्य बातें पायी जाती है। उनके सामाजिक दर्शन का सही ज्ञान भारतीय लोगों ने नूतन इतिहास का पर्याप्त ज्ञान का समावेश करता है। बड़े भारतीय जन–समूह की निरक्षरता पश्चिमी लोगों के साथ बहुत ही विशेष प्रकट करती है। शिक्षा के द्वारा निरक्षरता का निवारण उनके जीवन की एक प्रबल इच्छा बनी।''4 इस प्रकार के अद्वितीय व्यक्तित्व के कारण टैगोर अपने को एक महान कवि, साहित्यकार, समाज सुधारक और दार्शनिक के रूप में सीमित न रख सकें बल्कि अपने महान विचारों के कारण भारत की जनता को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने के लिए एक महान शिक्षा शास्त्री, शिक्षा विशेषज्ञ और शिक्षक के रूप में हमारे लिए वरदान सिद्ध हुए। शिक्षा सम्बन्धी उनके विचार निम्न है

टैगोर ने अपने समय की शिक्षा को दोषपूर्ण बताया। "सर्वोच्च शिक्षा वह है जो हमें न केवल सूचना प्रदान करती है वरन् जीवन का बाह्य परिस्थितियों से सामंजस्य करने योग्य बनाती है।'' टैगोर ने "सा विद्या या विमुक्तये'' का समर्थन किया। उनके अनुसार शिक्षा केवल जन्म–मरण से मुक्ति नहीं देती वरन् वह आर्थिक, मानसिक, सामाजिक दासता से भी मुक्ति देती है। टैगोर का मत था – ''शिक्षा में आदान और प्रदान दोनों ही निहित है। सच्ची शिक्षा संग्रहित ज्ञान के प्रयोग में है।''

3. गाँधी की शैक्षिक विचारधारा –

मोहनदास करमचंद गाँधी जो भारत के राष्ट्रपिता कहे गए, उन्होंने देश की तात्कालिक परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं का अवलोकन करके बालकों की शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण सुझाव एवं विचार प्रस्तुत किए जो आज भी प्रासंगिक हैं। उनकी शिक्षा को बुनियादी शिक्षा के नाम से भी जाना जाता हैं। उनकी शैक्षिक विचारधार संक्षेप में निम्नानुसार प्रस्तुत है –

''जो मुक्ति के योग्य बनाये वही विद्या है।'' महात्मा गाँधी ने शिक्षा की प्रक्रिया को तीन एच (भ्.भ्.भ्.) भ्मंक, भ्मंतज – भ्ंदक के रूप में प्रस्तुत किया है। एक एच. "मस्तिष्क की शिक्षा, दूसरा एच. हृदय की शिक्षा व तीसरा एच. हाथ की शिक्षा।'' "शिक्षा से मेरा अभिप्राय है कि बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चतुर्मुखी विकास।''

- शिक्षा के उद्देश्य के विषय में बताते हुए गाँधीजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि – ''मैंने सदैव हृदय की संस्कृति अथवा चरित्र निर्माण को प्रथम स्थान दिया है तथा चरित्र–निर्माण को शिक्षा का उचित आधार माना है।''
- गाँधीजी ने बालक के शारीरिक एवं मानसिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक नागरिकता, व्यवसायिक विकास पर बल दिया है
- सर्वोदय समाज की स्थापना पर बल दिया है। तथा गाँधी जी ने स्वयं कहा है कि "शिक्षा रोजगारोन्मुख न होकर रोजगार उत्पादक होनी चाहिए और जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए होना चाहिए।''
- उच्च आदर्श ग्रहण करें।'' इस प्रकार गाँधीजी स्वयं नियंत्रण द्वारा आत्मानुशासन को सर्वोच्च मानते है।

4. स्वामी विवेकानन्द की शैक्षिक विचारधारा

समकालीन भारत में अंग्रेजों द्वारा चलायी हुई शिक्षा प्रणाली के विरूद्ध विद्रोह करके, राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की स्थापना का बीड़ा उठाने वाले दार्शनिकों में स्वामी विवेकानन्द का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। गाँधी और अरविन्द के समान उन्होंने भारत पर पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली लागू करने का विरोध किया और भारत की संस्कृति के अनुरूप शिक्षा प्रणाली अपनाने का समर्थन किया।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का अर्थ – "मनुष्य में निहित शक्तियों का पूर्ण विकास है न कि मात्र सूचनाओं का संग्रह है।'' "यदि शिक्षा का अर्थ सूचनाओं से होता, तो पुस्तकालय संसार के सर्वश्रेष्ठ

संत होते तथा विश्वकोष ऋषि बन जाते।'' इनके अनुसार "शिक्षा उस सन्निहितपूर्णता का प्रकाश है, जो मनुष्य में पहले से ही विद्यमान है।''

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य निम्नानुसार है

- बालक की अन्तर्निहित पूर्णता को प्राप्त करना।
- शिक्षा द्वारा बालक का शारीरिक विकास।
- मानसिक एवं बौद्धिक विकास करना।
- बालक का मनुष्य रूप में चरित्र निर्माण करना।
- बालक का धार्मिक विकास, राष्ट्रीयता का विकास, बालक में समाज सेवा और विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास करना।
- बालक में व्यवसायिक विकास करना।
- आत्म–विश्वास, श्रद्धा एवं आत्म–त्याग की भावना का विकास करना।

5. जे. कृष्णमूर्ति की शैक्षिक विचारधारा –

जे. कृष्णमूर्ति एक विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक तथा आध्यात्मिक विषयों के बड़े ही कुशल एवं परिपक्व लेखक रहे है। इन्हें प्रवचनकर्ता के रूप में भी ख्याति प्राप्त थी। जे. कृष्णमूर्ति मानसिक क्रांति, बुद्धि की प्रकृति, ध्यान और समाज में सकारात्मक परिवर्तन किस प्रकार लाया जा सकता है, इन विषयों आदि के बहुत गहरे विशेषज्ञ रहे है। अपनी मसीहाई छवि को दृढ़तापूर्वक अस्वीकृत करते हुए कृष्णमूर्ति ने एक बड़े और समृद्ध संगठन को भंग कर दिया, जो उन्हीं को केन्द्र में रखकर निर्मित किया गया था। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि सत्य एक "मार्ग रहित भूमि' है और उस तक किसी भी औपचारिक धर्म, दर्शन अथवा संप्रदाय के माध्यम से नहीं पहुँचा जा सकता।

जे. कृष्णमूर्ति के शब्दों में – "शिक्षा द्वारा ही मनुष्य को जीवन का सही अर्थ समझाया जा सकता है और शिक्षा द्वारा ही उसे अनुचित मार्ग से सद् मार्ग पर लाया जा सकता है।''

वास्तविक शिक्षा वह है जो मनुष्य को आत्मज्ञान कराए। इनके शब्दों में – "अन्तः मन का ज्ञान ही शिक्षा है।''

जे. कृष्णमूर्ति की शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य निम्नांकित

- शिक्षा द्वारा एक संतुलित मानव का विकास करना है।
- ऐसा मानव जो चेतना युक्त हो, जो सद्भावना से परिपूर्ण हो, जो जीवन का अर्थ और उद्देश्य समझता हो।
- जो जाति, धर्म, सम्प्रदाय, संस्कृति आदि किसी भी आधार पर पूर्वागृहों एवं पूर्वाधारणाओं से मुक्त हो।
- जो द्वेष, घृणा और हिंसा जैसे दुष्प्रवृत्तियों से बहुत दूर हो।
- जो वैज्ञानिक बुद्धि तथा आध्यात्मिकता में समन्वय स्थापित कर सकने का सामर्थ्य रखता हो।
- जो मानव मात्र के जीवन को सुखी बना सकता हो।
- जो अपने लिए नये मूल्यों को निर्माण कर सकता हो और जो एक नूतन संस्कृति तथा नूतन विश्व का निर्माण कर सकता हो।

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उन्होंने बालक का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक मूल्यों, सांस्कृतिक, सृजनात्मकता, संवेदनशीलता, चरित्र निर्माण, व्यवसायिक प्रशिक्षण का विकास करना आवश्यक माना है।

6. निष्कर्ष

वर्तमान समाज में छात्र असन्तोष, बढ़ती अनुशासनहीनता, चारित्रिक पतन आदि ऐसे घटक हैं, जिनसे भारतीय समाज पतनोन्मुख हो रहा है। वर्तमान में राजस्थान शिक्षा की दृष्टि से पिछड़ा है, जबकि इतिहास सामान्ती युगीन राजस्थान में मेवाड़ अंचल में समकालीन अभिलेखों, विवरणों, प्रशासनिक प्रतिवेदनों अंग्रेज अधिकारियों आदि के संस्मरणों से ज्ञात होता है कि डॉ. मोहन सिंह मेहता एक शिक्षाविद् अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त व्यक्ति थे। आपने शिक्षा के क्षेत्र में कई संस्थाएँ स्थापित की तथा अनेक कार्यक्रम चलाएँ। यद्यपि उनके शैक्षिक विचारों से शिक्षा जगत परिचित है, किन्तु शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर शोध की दृष्टि से व्यवस्थित क्रम में उनके विचारों का अध्ययन कर संयोजन करने की भी आवश्यकता प्रतीत हुई ताकि विद्यालय शिक्षा, उच्च शिक्षा एवं शिक्षण–शिक्षा को क्रमबद्ध रूप से दिशा–निर्देश प्राप्त हो सके और उनके शिक्षा सम्बन्धित महत्वपूर्ण विचारों को शोध के माध्यम से सार्वजनिक किया जा सके।

संदर्भ –

- श्रीवास्तव, डॉ. कमल शंकर (2018) : "आदि शंकराचार्य एवं अद्वैत', प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ. सं. 25
- पाठक, रमेश प्रसाद (2015) : "शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य'', विकास प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृ.सं.
- शर्मा, आर.ए. (2010) : "शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार'', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ.सं. 504
- जोहरी, दिप्ती एवं कुमार, दिनेश (2016) : "शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार", उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, हल्द्वानी प्रकाशन, नैनिताल, उत्तराखण्ड, पृ.सं. 235, मसमंतदपदह. नवन.ंब.पद
- बिहारी, रमन एवं सिंह, डॉ. गजेन्द्र (2008) : "विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिन्तन', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ.सं. 509
- शर्मा, आर.ए. (2010) : "शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार'', आर. डिपो, मेरठ, पृ.सं. 508
- जोहरी, दिप्ती एवं कुमार, दिनेश (2016) : "शिक्षा और समाज'', उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी प्रकाशन, नैनिताल, उत्तराखण्ड, पृ.सं. 4
- शर्मा, आर.ए. (2010) : "शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल
- बत्रा, दिनानाथ (2014) : "भारतीय शिक्षा का स्वरूप", प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 17–18